

भारतीय डाक विभाग
Department of Posts
India

बाबा आमटे BABA AMTE



विवरणिका BROCHURE



तकनीकी आंकड़े TECHNICAL DATA

जारी करने की तारीख : 30 दिसम्बर, 2014
Date of Issue : 30 December, 2014

मूल्यवर्ग : 500 पैसा
Denomination : 500 p

मुद्रित डाक-टिकटें : 6 लाख*
Stamps Printed : 0.6 Million*

मुद्रण प्रक्रिया : वेट ऑफसेट
Printing Process : Wet Offset

मुद्रक : प्रतिभूति मुद्रणालय, हैदराबाद
Printer : Security Printing Press,
Hyderabad

© डाक विभाग, भारत सरकार। डाक-टिकट, प्रथम दिवस आवरण तथा सूचना विवरणिका के संबंध में सर्वाधिकार विभाग के पास हैं।

© Department of Posts, Government of India. All rights with respect to the stamp, first day cover and information brochure rest with the Department.

*एक लाख प्रस्तावक हेतु
*0.1 Million for proponent

मूल्य ₹ 5.00

बाबा आमटे

बाबा आमटे के नाम से लोकप्रिय मुरलीधर देवदास आमटे का जन्म महाराष्ट्र के हिंगणघाट में 26 दिसम्बर, 1914 को हुआ।

1936 में विधि में स्नातक डिग्री प्राप्त करने के बाद उन्होंने वरोरा में एडवोकेट के रूप में वकालत शुरू की। परन्तु खेतिहर वर्ग की विपन्नता और दुर्दशा ने उन पर गहरा प्रभाव डाला और कुछ ही समय बाद वे किसानों की सहकारिता के संगठन कार्य में जुट गए। 1935 में क्वेटा में आए भूकंप और 1940 के दशक के प्रारंभ में बंगाल में पड़े अकाल के दौरान उन्होंने प्रभावित स्थानों पर जाकर पीड़ितों की सहायता के लिए स्वयंसेवी के रूप में कार्य किया। रवीन्द्रनाथ टैगोर और महात्मा गांधी से प्रेरित होकर बाबा आमटे ने स्वतंत्रता संग्राम में सक्रिय रूप से भाग लिया और जेल में कैद राष्ट्रवादी नेताओं का प्रतिनिधित्व करने के उद्देश्य से वकीलों को संगठित करने के लिए उन्हें सजा भी हुई।

बाबा आमटे पर महाराष्ट्र के समाज सुधारक साने गुरु जी का भी प्रभाव था। बाबा आमटे ने अपनी संपत्ति का परित्याग कर दिया और वकालत छोड़कर अपनी पत्नी, साधना के सहयोग से एक श्रम आश्रम की स्थापना की। समाज द्वारा परित्यक्त लोगों की सामाजिक और आर्थिक दशा सुधारने की दिशा में उन्होंने सच्चे मन से कार्य किया। एक दिन कुष्ठ रोग से गंभीर रूप से ग्रस्त एक व्यक्ति को देखना उनके जीवन का परिवर्तनकारी क्षण सिद्ध हुआ और उन्होंने स्वयं को कुष्ठ रोगियों की देखभाल और पुनर्वास के प्रति समर्पित करने का प्रण लिया।

बाबा आमटे ने 1949 में कलकत्ता ट्रॉपिकल मेडिसिन स्कूल से कुष्ठ रोग पर 6 माह का पाठ्यक्रम पूरा किया। इसके बाद उन्होंने वरोरा के आस-पास के 60 गांवों में पैदल घूमकर कुष्ठ रोगियों का इलाज शुरू किया। बाबा आमटे ने 1949 में महारोगी सेवा समिति नामक एक पंजीकृत धर्मार्थ संस्था शुरू की, जो उनके कार्यकलापों का माध्यम बनी रही। उन्होंने अपनी पत्नी, दो बेटों और 6 कुष्ठ रोगियों के सहयोग से कुष्ठ रोग से ग्रस्त लोगों के सहायतार्थ 'आनंदवन' के नाम से एक सामाजिक संस्था बनाई। जल्द ही आनंदवन, कुष्ठ रोगियों की सहायता कर उन्हें सहयोगी और

रचनात्मक नेतृत्व में सक्षम और आत्मविश्वासी बनाने के बाबा आमटे के अथक अभियान का मुख्य केन्द्र बन गया। स्वावलंबी बनने के उद्देश्य से यहां के निवासियों ने खेती शुरू की और साथ ही इस संस्था का भी विस्तार हुआ और यह दो अस्पताल वार्डों से युक्त क्लीनिक बन गया। इसके साथ-साथ, इसके अंतर्गत, दृष्टिबाधित लोगों के लिए एक प्राथमिक स्कूल, मूक एवं बधिरों के लिए एक स्कूल तथा एक कृषि महाविद्यालय और अनाथालय भी संचालित होने लगा।

बाबा आमटे ने आदिवासियों के स्वास्थ्य में सुधार हेतु भी कार्य किया। राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा देने और सांप्रदायिक हिंसा को समाप्त करने के उद्देश्य से दिसम्बर, 1985 में उन्होंने कन्याकुमारी से जम्मू तक की भारत जोड़ो यात्रा की। इस सफर पर विभिन्न राज्यों से गुजरते हुए बाबा आमटे ने लोगों से धार्मिक कट्टरवाद तथा भाषायी व क्षेत्रीय टकराव की राह का त्याग कर देशहित को स्वार्थ से ऊपर रखने का अनुरोध किया। उन्होंने नर्मदा नदी पर बाँध बनाए जाने के कारण स्थानीय लोगों के विस्थापन का भी विरोध किया।

बाबा आमटे को 1971 में पद्मश्री, 1986 में पद्मविभूषण एवं विकलांग कल्याण पुरस्कार और 1999 में गांधी शांति पुरस्कार से सम्मानित किया गया। बाबा आमटे को 1983 में डेमियन-डट्टन पुरस्कार और लोक सेवा के लिए 1985 में रेमन मैगसेसे पुरस्कार भी प्रदान किया गया।

बाबा आमटे ने समाज के कल्याण के लिए आजीवन अथक कार्य किया। 9 फरवरी, 2008 को उनका निधन हो गया।

डाक विभाग, बाबा आमटे पर डाक-टिकट जारी करते हुए प्रसन्नता का अनुभव करता है।

आभार :-

मूलपाठ : प्रस्तावक द्वारा उपलब्ध कराई गई सामग्री पर आधारित

डाक-टिकट/ : अलका शर्मा
प्रथम दिवस आवरण/
विरूपण

BABA AMTE

Muralidhar Devidas Amte, lovingly referred to as Baba Amte, was born at Hinganghat, Maharashtra on 26th December, 1914.

After obtaining a degree in Law in 1936, he started practicing as an advocate in Warora. Soon after, deeply moved by the poverty and degradation of the peasantry, he began organizing farmers' cooperatives. He worked as a volunteer at sites affected by disaster as the Quetta earthquake of 1935 and Bengal famine in early 1940s. Influenced by Rabindranath Tagore and Mahatma Gandhi, he took an active part in the freedom struggle and was sentenced for organizing the lawyers to represent the imprisoned nationalist leaders.

Baba Amte was also influenced by Sane Guruji, a social reformer from Maharashtra. He renounced his property and gave up the legal practice to set up a Shram Ashram (Hermitage of Labour) with the support of his wife, Sadhana. He worked wholeheartedly to improve the abysmal social and economic conditions of the social outcasts. It was the sight of a person in advanced stages of leprosy which proved to be the turning point in his life and influenced him to take the pledge to work for the care and rehabilitation of leprosy patients.

In 1949, he attended a six month course on leprosy at the Calcutta School of Tropical Medicine. He started treating leprosy patients in 60 villages around Warora by moving across villages on foot. In 1949, Baba Amte founded the Maharogi Sewa Samiti, a registered charity, which remained a medium for his activities. He set up a commune for leprosy patients, along with his wife, two sons, and six leprosy patients, called the Anandwan or 'Forest of Joy'.

Anandwan soon became the nerve centre of Baba Amte's relentless crusade, helping leprosy patients become self-confident persons capable of cooperative and creative leadership. Its inhabitants cultivated the land to become self sufficient, and the establishment grew to include a clinic with two hospital wards, primary school for visually impaired, school for hearing and speech impaired, a college of agriculture, and an orphanage.

Baba Amte also worked for improving the health of the tribals. With a view to bring about national integration and check communal violence, Baba Amte undertook the Bharat Jodo Yatra in December, 1985 from Kanyakumari to Jammu and covered different states reiterating his plea for checking religious fundamentalism, linguistic and territorial bickering and keeping the country above individuals. He also protested against the displacement of people affected by building of the dam across the river Narmada.

Baba Amte was conferred the Padma Shree in 1971, Padma Vibhushan, and the Welfare of the Disabled award in 1986, and Gandhi Peace Prize in 1999. Baba Amte also received the Damien-Dutton Award in 1983 and the Ramon Magsaysay Award for Public Service in 1985.

Baba Amte worked incessantly for welfare of the society till his death on 9th February, 2008.

Department of Posts is happy to issue a postage stamp on Baba Amte.

Credits:-

Text : Based on the information
furnished by the proponent
Stamp/FDC/ : Alka Sharma
Cancellation